सम्पूर्णता के लिए तीव्र पुरूषार्थ

प्रथम सप्ताह

स्वमान - मैं लाइट हाउस और माइट हाउस हूँ।

जैसे लाइट हाउस एक स्थान पर रहते भी निरंतर अपनी लाइट फैलाता है, राह दिखाता रहता है, सदा ऊंचाई पर रहता है... वैसे ही हमें भी लाइट हाउस और माइट हाउस बनकर सारे संसार को राह दिखानी है। अपनी ऊंची स्थिति के आसन पर सेट रहना है...।

योगाभ्यास :-

- मैं लाइट हाउस और माइट हाउस हूँ... मुझसे निरंतर चारों ओर लाइट और माइट की किरणें फैल रही हैं... जिससे संसार से अज्ञान अंधकार दूर होता जा रहा है... सभी आत्मायें शक्तिशाली होती जा रही हैं...।
- मैं सर्वशक्तिमान शिव बाबा के साथ कम्बाइंड हूँ... पावर हाउस से अनंत शक्तियों की किरणें मेरे ऊपर आ रही हैं... और मुझमें समाती जा रही हैं और फिर मुझसे चारों ओर फैल रही हैं...।
- मैं बाबा के साथ एक ऊंची पहाड़ी पर स्थित हूँ... नीचे सभी मनुष्य आत्मायें खड़ी हैं.. और हमारी ओर प्यासी निगाहों से देख रही हैं... बाबा और मैं उन्हें सकाश दे रहे हैं... हमारी दृष्टि से लाइट और माइट निकलकर उन तक जा रही हैं....।

धारणा - अंतर्मुखता

ज्वालामुखी योग के लिए प्रथम आवश्यक धारणा है - अंतर्मुखता। अंतर्मुखता हमारी शक्तियों को व्यर्थ होने से बचाती है और हमें योग की गहराई में ले चलने में मदद करती है इसलिए अंतर्मुखी बनें।

चिंतन :-

- योग के भिन्न-भिन्न स्वरूप कौन-कौन से हैं?
- मेरे योग की स्थिति वर्तमान समय कैसी है?
- योग की किसी भी स्थिति में मैं कितना समय एकाग्र हो पाता हूँ?
- योग में एकाग्रता और अनुभूति कैसे बढ़े?
- वर्तमान समय बापदादा हमें किस योग की अवस्था में देखना चाहते हैं?

साधकों प्रति:- प्रिय साधको, जब कोई भी मकान बनाया जाता है तो शुरूआत नींव से की जाती है। नींव जितना मजबूत होती है, मकान भी उतना ही मजबूत होता है। यदि हमें ज्वालामुखी योग की अवस्था तक पहुंचना चाहते हैं तो योग की आधारभूत धारणाओं पर हमें ध्यान देना होगा। जितनी हमारी पवित्रता और आत्मिक दृष्टि मजबूत होगी उतना ही हम शक्तिशाली योगी बनेंगे। साथ ही जितना हम अभ्यास करेंगे, उतना ही योग में परिपक्वता आयेगी। कहावत भी है - ''करत-करत अभ्यास के जड़मति होते सुजान...।''

दूसरा सप्ताह

स्वमान - मैं बाप समान महातपस्वी हूँ।

- जैसे ब्रह्मा बाबा ने तपस्या को अपने जीवन में सर्वोपरि स्थान दिया। बारम्बार तपस्या के लिए बच्चों को भी प्रेरित करते रहे। तपस्या के द्वारा ही उन्होंने सर्व समस्याओं का समाधान किया और अचल-अडोल रहते हुए अपनी सम्पन्नता और सम्पूर्णता को प्राप्त किया। ऐसे ही हमें भी बाप समान महातपस्वी बनना है और अपनी सम्पूर्ण अवस्था को प्राप्त करना है।

योगाभ्यास :-

- जैसे शंकर को हिमालय पर्वत पर गहन तपस्या में मग्न दिखाते हैं कि देह, देह की दुनिया से परे किसी भी इच्छा-कामना से परे, अपनी धुन में वे मग्न रहते हैं, शकर जी हमारे ही तपस्वी रूप के यादगार हैं... तो हम भी गहन साधना में मग्न रहें...।
- शंकर को अशरीरी दिखाते हैं, विषय-विकारों पर विजयी दिखाते हैं... एकांतवासी दिखाते हैं, हम भी एकांतवासी बनें और अशरीरी बनने की साधना करें।
- दिखाते हैं कि जब-जब किसी मायावी ने या कामदेव ने शंकरजी की साधना भंग करनी चाही, तब-तब शंकरजी ने अपनी तीसरी आँख खोलकर उन्हें भस्म कर दिया... हम भी अपने ज्वालामुखी योग से व्यर्थ विचारों और व्यर्थ संस्कारों का अग्नि संस्कार करें।

धारणा :- 'मैंपन' का समर्पण।

- ज्वालामुखी योग के लिए 'मैंपन' का समर्पण परम आवश्यक है। मैंपन ही सर्व समस्याओं की जननी है। प्यारे बाबा ने भी इस बार हमसे अपने जन्मदिन पर यही गिफ्ट मांगी है, तो हम अपने 'मैंपन' को अर्पण कर उसी जगह 'बाबापन' ले आयें। वास्तव में करनकरावनहार तो वही है, हम तो निमित्त मात्र हैं।

चिंतन :-

- देह-अभिमानी और देही अभिमानी स्थिति वालों की निशानी क्या होती है?
- महीन 'मैंपन' क्या-क्या है?
- देह अभिमान वा 'मैंपन' से क्या-क्या नुकसान है?
- 'मैंपन' का त्याग कैसे करें? इसके लिए क्या अभ्यास करें?

साधकों प्रति:- प्रिय साधको, साधना का बीज है - बेहद का वैराग्य वृत्ति। जितना वैराग्य तीव्र होता है, उतना ही साधना में भी तीव्रता आती है। राग हमें संसार में बांध देता है। बुद्धि भी दुनिया में ही भ्ंटकती रहती है। मनमनाभव होने के बजाए तनमनाभव, धनमनाभव और जनमनाभव में रमा रहता है। बंदर की तरह यहां से वहां उछलता-कूदता रहता है। जो करना चाहिए वो ना करके बाकी वो सब कुछ करता रहता है जो उसे नहीं करना चाहिए। अत: हे साधकों, अब बेहद की वैराग्य वृत्ति को धारण करो ताकि परमधाम का दरवाजा जल्दी खुले और सभी आत्मायें वापस अपने घर में विश्राम कर सकें।

बरनाला। ए.डी.सी.परमजीत सिंह को शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य समझाने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.बृज तथा अन्य।

चेन्नई। मेयर सईद दुराईस्वामी को शिवरात्रि का आध्यात्मिक रहस्य समझाने के पश्चात् ईश्वरीय सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.ब्र.कु.देवी।

राजयोग से आती पृष्ठ 12 का शेष

गया, संस्था के 75 वर्षों के सुहावने सफर को आकर्षक प्रदर्शनी के द्वारा दिखाया गया, जीवन की विषम परिस्थितियों में आध्यात्मिकता कैसे मदद करती है इसे एक लघु नाटिका के द्वारा प्रदर्शित किया गया, 'स्वस्थ जीवन के अनमोल रहस्य' इस मंडप में लाईट और साउण्ड के द्वारा मन का प्रभाव तन पर तथा राजयोग के अभ्यास से प्राप्त गुणों एवं शक्तियों से शारीरिक बीमारियों में कैसे राहत मिलती है यह दर्शाया गया। इस कार्यक्रम में स्वामी विवेकानंद इंटरनेशनल स्कूल के डारेक्टर योगेश पटेल, हेमेन्द्र मेहता, गणेश नायडू, डॉ.उमेश ओझा, आर्किटेक्ट विवेक बोले सहित अनेक गणमान्य लोग उपस्थित थे।

बेतिया। महाशिवरात्रि के अवसर पर 'शिवध्वजारोहन' करते हुए सांसद संजय जयसवाल साथ में हैं अजय, प्रमोद अग्रवाल एवं ब्र.कु.अंजना।

बिलासपुर। शिवरात्रि पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ब्र.कु.मंजु तथा मंचासीन हैं डॉ.सिंह, डॉ.गुरमीत कौर एवं सतीश जयसवाल।

आंधलगांव (भण्डारा)। केंद्रीय उड्डयन मंत्री प्रफुल्ल भाई पटेल को ईश्वरीय संदेश देने के पश्चात् सौगात भेंट करते हुए ब्र.कु.ज्योति।

चितापुर (कर्नाटक)। 'प्लेटिनम जुबली' पर आयोजित कार्यक्रम को संबोधित करते हुए ब्र.कु.हरीश तथा मंचासीन हैं विधायक बाल्मिकी, सिद्धावीर शिवाचार्य स्वामी, ब्र.कु.गायत्री, ब्र.कु.गिरीजा तथा अन्य।

चित्तौड़गढ़। 'शिव संदेश रैली' को शिवध्वज दिखाकर उद्घाटन करते हुए नगरपालिका अध्यक्षा गीता देवी, उपाध्यक्ष संदीप शर्मा एवं ब्र.कु.आशा।

अलथान, सुरत। 'प्लेटिनम जुबली' कार्यक्रम का दीप प्रज्ज्वलित कर उद्घाटन करते हुए मंत्री विवेक पटेल, गुजरात टाइम्स के गणेश भाई, राजेश भाई देसाई, ब्र.कु.गीता एवं ब्र.कु.लक्ष्मी।